Notification No-542/2023

Notification Date: 27/0/2023

Name of Scholar: Sunil Kumar Yadav

Name of Supervisor: Prof. Chandradev Singh Yadav

Name of Department/Center: Hindi, Faculty of Humanities and Languages. JMI

Topic of Research: 21VIN SADI KE HINDI KE YATRAVRITTANTON KA ALOCHNATMAK ADHYAYAN (SAMAJIK, SANSKRITIK AUR RAJNITIK SANDARBHON MEIN)

बीज शब्द- यात्रावृत्तांत, समाज, संस्कृति, राजनीति, आर्थिक, लोकतंत्र, आलोचना।

निष्कर्ष-

इक्कीसवीं सदी के पूर्व के यात्रा साहित्य पर यदि दृष्टि डाली जाए तो यह कहना सही होगा कि समय के बदलते दौर में 'यात्रावृत्त' में व्यापक परिवर्तन आया है। यात्रावृत्तांत ने अपने प्रारम्भिक काल से चली आ रही प्रक्रिया में मनुष्य को एक-दूसरे से जुड़ने का मौका दिया। समय-समय पर अनेक देशों की खोज से सभी देशों को एक-दूसरे के आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज, सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रिया को जानने-समझने के लिए मजबूर होना पड़ा। वर्तमान समय में लिखे जा रहे यात्रावृत्तांतों में मनुष्य के स्वभाव, उसकी चिंता, संस्कृति, प्रकृतिक सौंदर्य, सामाजिक विसंगति, आर्थिक असमानता और राजनीतिक अस्थिरता केंद्र में आ गई है। समाज इन्हीं विसंगतियों में गहरी सांसें ले रहा है। इक्कीसवीं सदी के यात्रावृत्तांतों के माध्यम से इन्हीं विसंगतियों को देखा गया है और कुछ नए समाधान की संभावना पर विचार व्यक्त किया गया है।

साहित्य की इस कथेतर विधा के माध्यम से बाह्य लक्ष्यों की कमियों को बताते हुए समाज के लिए ऐसी व्यवस्था की जरूरत महसूस की गई है, जो समानता, न्याय, बंधुत्व और भाईचारे की जमीन पर आधारित हो। स्त्रीगत, जातिगत और आदिवासी शोषण से मुक्त हो। आर्थिक और राजनीतिक सहभाव को स्थापित करे। यह सब तभी संभव है जब व्यक्ति आंतरिक यानी कि नैतिक मानदंडों से युक्त रहेगा। अमृतलाल वेगड़, नरेश मेहता, मृदुला गर्ग, रामशरण जोशी, असगर वजाहत, ओम थानवी, हरीराम मीणा, ललित सुरजन, अनिल यादव, कृष्णा सोबती, अनुराधा बेनीवाल, मधु कांकरिया, गरिमा श्रीवास्तव, रामजी तिवारी, अजय सोडानी जैसे यात्रियों के यात्रावृत्तांत इन्हीं विसंगतियों से पाठक वर्ग का साक्षात्कार कराते हैं। समाज, संस्कृति और राजनीतिक घटनाक्रमों पर मुकम्मल विचार इन यात्रावृत्तांतों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।